पर्यटन विशेषांक

पूर्वोत्तर सीमा रेल दर्पण

अंक - 11, जुलाई-दिसंबर, 2024

पूर्वोत्तर सीमा रेल दर्पण - मुख्यालय, मालीगांव की गृह पत्रिका

पूर्वोत्तर सीमा रेल दर्पण

पर्यटन विशेषांक

संरक्षक
चेतन कुमार श्रीवास्तव
महाप्रबंधक

परामर्शदाता
वीर भद्र विश्वकर्मा
अपर महाप्रबंधक

मार्गदर्शक
संदीप कुमार
मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं प्रधान मुख्य बिजली इंजीनियर

प्रधान संपादक
विक्रम सिंह
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक
कृष्ण प्रसाद गुप्ता
वरिष्ठ अनुवादक

संपर्क
महाप्रबंधक (राजभाषा) मुख्यालय, मालीगांव, गुवाहाटी-11

चेतन कुमार श्रीवास्तव
महाप्रबंधक
CHETAN KUMAR SHRIVASTAVA
GENERAL MANAGER

सत्यमेव जयते

पूर्वोत्तर सीमा रेल
NORTHEAST FRONTIER RAILWAY
मालीगांव, गुवाहाटी - 781011
MALIGAON, GUWAHATI – 781011

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि पूर्वोत्तर सीमा रेलवे, मुख्यालय, राजभाषा विभाग की नियमित छमाही पत्रिका का"पर्यटन विशेषांक"के रूप में प्रकाशन किया जा रहा है।

विभागीय पत्रिकाएं आपसी संवाद का बेहतर माध्यम होती हैं। इस पत्रिका के जरिए हमें इस रेल पर किए जा रहे सराहनीय एवं महत्वपूर्ण गतिविधियों की जानकारी प्राप्त तो होती ही है, साथ ही इस विशेषांक के जरिए पूर्वोत्तर क्षेत्र में स्थित पर्यटन स्थलों के बारे में जानकारियाँ सभी पाठकों को रुचिकर लगेगी ।

मुझे विश्वास है कि इस प्रकार की पत्रिकाओं से रेलवे में कार्यरत रेलकर्मी निश्चित रूप से लाभान्वित होंगे। इसके अलावा राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार हेतु इससे अवश्य सहायता मिलेगी।

मैं इस प्रयास के लिए राजभाषा विभाग को बधाई देता हूँ और पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

5/02/25

(चेतन कुमार श्रीवास्तव)
महाप्रबंधक

☎ : दूरसंचार DOT 0361-2676000 | रेलवे RLY 22000 | फैक्स दूरसंचार FAX : DOT 0361-2676124 | ई-मेल E-mail : gm@nfr.railnet.gov.in

वीर भद्र विश्वकर्मा
अपर महा प्रबंधक
VEER BHADRA VISHWAKARMA
ADDITIONAL GENERAL MANAGER

सत्यमेव जयते

पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे, मालीगाँव, गुवाहाटी - 781011, असम
NORTHEAST FRONTIER RAILWAY
Maligaon, Guwahati - 781 011, Assam
Tel.: 91-361-2676002 (O)
Fax: 91-361-2676097 (O)
E-mail: agm@nfr.railnet.gov.in

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि पूर्वोत्तर सीमा रेलवे, राजभाषा विभाग ने पूर्वोत्तर सीमा रेल दर्पण पत्रिका को "पर्यटन विशेषांक" के रूप में प्रकाशित करने का निश्चय किया है।

ऐसी प्रेरक पत्रिकाओं के प्रकाशन से रेलकर्मियों में हिंदी के प्रति जागरूकता पैदा होगी और उन्हें राजभाषा के प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार हेतु प्रेरणा मिलेगी। पत्रिकाओं में प्रकाशित की जा रही रचनाओं से रेलकर्मियों की लेखन एवं साहित्यिक प्रतिभा का पता चलेगा और अन्य सहकर्मियों में इसका अच्छा संदेश जाएगा।

मुझे आशा है कि पर्यटन विशेषांक से राजभाषा के प्रयोग-प्रसार के साथ-साथ पूर्वोत्तर क्षेत्र के पर्यटन स्थलों के बारे में सार्थक जानकारी प्राप्त होगी और इससे पाठक भी प्रकृति एवं परंपराओं के निकटस्थ होंगे तथा वे इस जानकारी के माध्यम से एक नई ऊर्जा का अनुभव करेंगे।

इस सराहनीय प्रयास के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

(वीर भद्र विश्वकर्मा)
अपर महा प्रबंधक

संदीप कुमार, आईआरएसईई
मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
प्रधान मुख्य बिजली इंजीनियर
SANDEEP KUMAR, IRSEE
MUKHYA RAJBHASHA ADHIKAR &
PRINCIPAL CHIEF ELECTRICAL
ENGINEER

पूर्वोत्तर सीमा रेलवे
मुख्यालय, मालीगांव, गुवाहाटी -11
NORTHEAST FRONTIER RAILWAY
HQ,MALIGAON, GUWAHATI -11

संदेश

यह प्रसन्नता की बात है कि पूर्वोत्तर सीमा रेल, मुख्यालय राजभाषा विभाग द्वारा **"पर्यटन विशेषांक"** के रूप में पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है जो एक अच्छा प्रयास है।

हिंदी संघ की राजभाषा होने के कारण सभी सरकारी कामकाज हिंदी में करना और अपने अधीनस्थों को राजभाषा में काम करने के लिए प्रेरित करना हमारा संवैधानिक दायित्व है। इसके साथ ही रेलकर्मियों के पठन-पाठन के लिए समय-समय पर इस प्रकार की पत्रिकाओं का प्रकाशन हिंदी भाषा के प्रति रुचि जागृत करती रहेगी।

इस अंक को पर्यटन विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने का हमारा मुख्य उद्देश्य पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति के साथ-साथ लोकप्रिय एवं दर्शनीय स्थलों की जानकारी प्रदान करना है। मुझे विश्वास है कि यह विशेषांक सभी के लिए उपयोगी साबित होगा।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित ।

05.02.2025

(संदीप कुमार)
मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं
प्रधान मुख्य बिजली इंजीनियर

टेली फैक्स : 0361-2676028 : ई-मेल : cee@nfr.railnet.gov.in

संपादकीय

पूर्वोत्तर सीमा रेल, मुख्यालय राजभाषा विभाग दवारा इस बार प्रकाशित पर्यटन विशेषांक भी हमेशा की तरह राजभाषा के प्रयोग एवं प्रचार-प्रचार में अपनी भूमिका निभाने के एक प्रयास में संलग्न है।

इस पत्रिका में शामिल लेख, कविताएं एवं अन्य जानकारी रचनाकारों तथा विभिन्न स्त्रोतों से साभार ली गई है और इसे पठनीय बनाने का प्रयास किया गया है । यह पत्रिका न केवल राजभाषा विभाग के पहल पर बल्कि हमारे रेल अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सार्थक सहयोग से किया जा रहा है । निश्चित रूप से इसके पठन-पाठन से हिंदी शब्दों एवं वाक्यांशों की रचना में सहायता मिलेगी और राजभाषा के रूप में सरकारी कामकाज की हिंदी में प्रगामी सुधार होगा ।

पाठकों को पर्यटन स्थलों की संक्षिप्त जानकारी दी गई है ताकि अधिक से अधिक स्थलों तक वे भ्रमण कर अपने आनंद और उत्साह को दुगुना कर सके ।

इस छोटी-सी पत्रिका को बेहतर बनाने के लिए आपके बहुमूल्य सुझाव का हम स्वागत करेंगे ।

विक्रम सिंह
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
पूर्वोत्तर सीमा रेलवे

अनुक्रमणिका

अंक - 11 (जुलाई-दिसम्बर, 2024)

क्र. सं.	शीर्षक	विधा	लेखक/कवि	पृष्ठ
1.	पर्यटन एक सर्वांगीण विकास यात्रा	लेख	साभार	1-2
2.	गुवाहाटी एवं उसके आसपास के दर्शनीय स्थल	लेख	संकलित	3-10
3.	नींद और मौत	कविता	सी. एन. मजूमदार	11
4.	कार्मिक विभाग दवारा निर्मित लघु फिल्म 'असर'	समीक्षा	कृष्ण प्रसाद गुप्ता	12
5.	वृद्धाश्रम	कविता	उदीप राजबंशी	13
6.	''जिस विश्व में हम रह रहे हैं....... ''	लेख	अतुल कुमार मिश्रा	14-15
7.	आधी हथकड़ी	कविता	अनुराग मजूमदार	16
8.	एक चिड़िया	कविता	विक्रम सिंह	17
9.	द फ्रोज़न रोज़	कविता	कमलिका मजूमदार	18
10.	करें तो क्या करें	कविता	संतोष कुमार दत्त	19
11.	वेदना	कविता	मनीषा शर्मा	20
12.	मैं कवि नहीं हूँ	कविता	विजय कुमार दास	21
13.	बादलों के प्रदेश शिलांग में	संस्मरण	रीता सिंह 'सर्जना'	22-24
14.	एक गजल..... महसूस करें हर शेर को	गजल	कैलाश मण्डेला	25
15.	दिवाली	कविता	चन्द्रकान्त तिवारी 'राही'	26
16.	मुख्यालय की गतिविधियां	आलेख	जनसपंर्क	27-28
17.	राजभाषा गतिविधियां	आलेख	राजभाषा	29-32
18.	राजभाषा नियम - 1976	राजभाषा	राजभाषा	33
19.	उर्जा संरक्षण हेतु उपाय	लेख	साभार	34-36

नवीनीकृत रंग भवन का उद्घाटन करते हुए
पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के महाप्रबंधक श्री चेतन कुमार श्रीवास्तव
एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण

पर्यटन एक सर्वांगीण विकास यात्रा

-- साभार

भारतीय प्राचीन ग्रंथों में स्पष्ट रूप से मानव के विकास, सुख और शांति व ज्ञान के लिए पर्यटन को अति आवश्यक माना गया है।

हमारे देश के ऋषि मुनियों ने भी पर्यटन को प्रथम महत्व दिया है प्राचीन गुरुओं (ब्राह्मणों, ऋषि-तपस्वियों) ने भी यह कहा है कि 'बिना पर्यटन मानव अंधकार प्रेमी होकर रह जायेगा।'

पर्यटन एक महत्वपूर्ण आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र है जो विभिन्न देशों और क्षेत्रों को एक साथ जोड़ता है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसका सांस्कृतिक आदान-प्रदान, अर्थव्यस्था और मानवीय संबंधों पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

पर्यटन विश्व के विभिन्न कोनों से लोगों को एक ही स्थान पर आने-जाने की सुविधा प्रदान करता है। यह विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बारे में जानने के लिए ज्ञान के सीमांकन में सहायक भूमिका निभाता है। जब कोई व्यक्ति पर्यटन के संपर्क में आता है तो वह जाति, धर्म, भाषा और वर्ण के भेदभाव के बिना विभिन्न देशों के विभिन्न लोगों से मिलता है। उस स्तर पर विभिन्न आकार, प्रकृति, विश्वास और प्रथाओं के विभिन्न आंदोलनों से जुड़े लोग पाए जा सकते हैं। पर्यटकों की भूमिका यहीं तक सीमित नहीं है वह अलग-अलग स्वभाव, अलग-अलग शैली और अलग-अलग रीति-रिवाजों वाले लोगों से मिलते हैं। वह उनसे नए गुण और नए धर्म प्राप्त करना पसंद करता है। एक यात्री विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के प्रति सहानुभूति दिखाकर स्वयं का विकास करता है।

लाभ :

पर्यटन हमें आनंद देता है। जब कोई व्यक्ति विभिन्न कार्यों में उलझ जाता है और बोझिल हो जाता है या बिना कुछ किए घर पर दिन बिताता है, तो बाहर जाकर कुछ देर आराम करना चाहता है। यात्रा हमारे मन की थकान को दूर करती है। यात्रा के दौरान लंबे समय से दूर रहने वाले अपने प्रियजनों और रिश्तेदारों से मिलना एक विशेष संबंध माना जाता है। ऐतिहासिक स्मारकों, सांस्कृतिक स्थलों, मठों, मंदिरों और प्रकृति की प्राकृतिक सुंदरता का आनंद हम तब लेते हैं जब हम नए परिवेश में दूर-दूर तक यात्रा करते हैं, यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि यह दुख से छुटकारा पाने के लिए एक अचूक दवा है।

ज्ञान :

पर्यटन से बहुत कुछ सीखने को मिलता है। यह हमारे ज्ञान की परिभाषा को बढ़ाता है । छात्र शहर या उपशहरी क्षेत्रों में स्थित कला, दीर्घाओं, कोयला खदानों, चिड़ियाघरों और विज्ञान पार्कों में जाकर बहुत कुछ सीखते हैं। इन सभी चीजों के बारे में, जो उन्हें स्कूल में किताबें पढ़कर नहीं मिल पातीं, यात्रा के दौरान

अलग-अलग चीजें अपने दिमाग में रख सकते हैं। किताबें हमें कभी भी वह सारी खबरें नहीं दे सकती जो पर्यटन हमें प्रदान करता है। लेकिन जो आंखों से देखा जाता है, उसका प्रतिबिम्ब सदैव व्यक्ति के मन में बन जाता है। पर्यटन मानव अवलोकन और पर्यवेक्षण शक्तियों को बढ़ाता है । कम समय में कई स्थानों का भ्रमण करने के बाद मन और हृदय अत्यंत आनंद से उत्साहित हो जाता है । अप्रत्यक्ष रूप से पर्यटन मानव अवलोकन और पर्यवेक्षण शक्तियों को बढ़ाता है। कम समय में कई स्थानों का भ्रमण करने के बाद मन और हृदय अत्यंत आनंद से उत्साहित हो जाता है। अप्रत्यक्ष रूप से वह हमारे ज्ञान को बढ़ाता है। पर्यटन का स्वास्थय पर प्रभाव काफी पड़ता है।

राष्ट्रीय एकता और पर्यटन :

राष्ट्रीय एकता बनाये रखने में पर्यटन की भूमिका आवश्यक है। इस क्षेत्र में अलग-अलग लोग जाति, धर्म, क्षेत्रीयता से ऊपर उठकर एक-दूसरे के प्रति मित्रता के सूत्र से बंधे होते हैं। ऐसा देखा गया है कि नए लोगों के संपर्क में आने से दूरदराज के इलाकों के लोगों को काफी फायदा होता है। यहां एक-दूसरे को भाईचारे की डोर में बांधना आसान है।

अर्थव्यवस्था और पर्यटन :

पर्यटन उद्योग का एक मजबूत स्तंभ है। इसकी वृद्धि में होटल, परिवहन, फोटोग्राफी, हस्तशिल्प आदि व्यवसाय प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होने की संभावना है। पर्यटन के कारण देश या राज्य की विभिन्न सेवाओं जैसे हवाई अड्डे, रेलवे, सड़क, बंदरगाह, बिजली, टेलीफोन, जल आपूर्ति आदि की मांग लगातार बढ़ रही है। यदि ये सभी बुनियादी ढाँचे विकसित नहीं किए गए तो पर्यटकों को यहाँ आने के लिए आकर्षित करना आसान नहीं है। पर्यटन के कारण कई क्षेत्रों में बेरोजगारी की समस्या कुछ हद तक कम हो गई है। देश में जितने अधिक पर्यटक विदेशों से आएंगे, हमारी विदेशी मुद्रा आय उतनी अधिक होगी। इसके परिणामस्वरूप विभिन्न प्रकार के सामान, मशीनरी या किसी अन्य निर्यात में कोई कठिनाई नहीं होगा।

भारत में पर्यटन :

भारत में तीर्थयात्रा और पारिवारिक यात्राएँ बहुत लोकप्रिय हैं। पर्यटन के इतिहास में हमारे भारत में फाहयान और ह्वेनसांग का नाम सोने में अंकित है। कोलंबस ने भारत का दौरा किया और एक पूरी नई दुनिया की खोज की। वास्कोडीगामा भी इसी उद्देश्य से भारत आया था।

पर्यटन ने आज अंतराष्ट्रीय परिदृश्य को पूरी दुनिया में फैला दिया है। विश्व शांति बनाए रखने के लिए संयुक्त राष्ट्र के नियमित सत्र में पूरे विश्व के नेता एक साथ आते हैं। वे विश्व सम्मेलनों में भी भाग लेते हैं। आर्थिक संबंध स्थापित करने के लिए समय-समय पर विभिन्न देशों का दौरा करना उनके लिए एक सामान्य नियम बन गया है ।

पर्यटन हमें दुनिया में सामाजिक इंसान के रूप में स्थापित करता है। ऐसा लगता है मानो यह इंसान इतनी बड़ी दुनिया में एक परिवार की सीमा पर केवल एक ग्रंथि से बंधा हुआ है ।

*****

गुवाहाटी एवं उसके आस-पास के दर्शनीय स्थल

- संकलित

गुवाहाटी विशाल ब्रह्मपुत्र नदी के दक्षिणी किनारे पर बसा हुआ पूर्वोत्तर भारत में असम का सबसे बड़ा नगर हैं। प्राचीन समय में गुवाहाटी को प्रागज्योतिषपुर नाम से जाना जाता था। गुवाहाटी दो शब्दों 'गुवा' और 'हाटी' से मिलकर बना हैं, जिसमे 'गुवा' का अर्थ है सुपारी और 'हाटी' का अर्थ बाजार। गुवाहाटी शहर को 'नार्थ ईस्ट इंडिया की सेवन सिस्टर्स' का प्रवेश द्वार भी कहते हैं। गुवाहाटी में प्राचीन मंदिर की संख्या बहुत अधिक हैं और प्रत्येक मंदिर की कोई न कोई दिलचस्प कहानी सुनने को मिलती हैं जो कि आपको इतिहास के पन्ने पलटने पर मजबूर कर देती हैं।

यहां के प्रमुख मंदिरों में कामाख्या देवी के मंदिर में आने वाले भक्तगणों की संख्या बहुत अधिक होती हैं । गुवाहाटी शहर में शहरीकरण और व्यावसायीकरण के आधुनिक युग के पहलु को ध्यान में रखते हुए शानदार जीवन शैली और एक खूबसूरत नाइटलाइफ का समावेश देखने को मिलता हैं। गुवाहाटी में एक चिड़ियाघर हैं जिसे असम राज्य चिड़ियाघर सह वनस्पति उद्यान के नाम से भी जाना हैं और यह उत्तर-पूर्व भारत का सबसे बड़ा चिड़ियाघर है। इस चिड़ियाघर में अधिक संख्या में विभिन्न जाति-प्रजाति के जानवर देखने को मिलते हैं ।

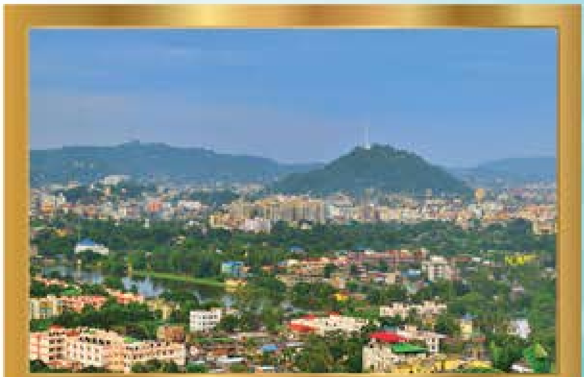

गुवाहाटी रेलवे स्टेशन एवं गुवाहाटी शहर

माँ कामाख्या मंदिर

कामाख्या मंदिर (Kamakhya Temple) भारत के असम राज्य के गुवाहाटी शहर से 8 किलोमिटर दूर स्थित कामाख्या क्षेत्र के नीलाचल पर्वत पर स्थित है । नीलाचल अथवा नीलशैल पर्वतमालाओं पर स्थित मां भगवती कामाख्या का सिद्ध शक्तिपीठ सती के इक्यावन शक्तिपीठों में सर्वोच्च स्थान रखता है। यह पवित्र धाम तंत्र-मंत्र की साधना के लिए भी जाना जाता है। कामाख्या मंदिर में भक्तों को बुरी नजर से बचाने का मिथक है। नीलाचल पहाड़ियों के ऊपर स्थित, इस मंदिर के मुख्य देवता भगवान शिव और दक्षयज (मृत्यु अवतार) हैं। यह मंदिर निश्चित रूप से गुवाहाटी के दर्शनीय स्थल में से एक है ।

अम्बुबाची मेला : असम की धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर

अम्बुबाची मेला असम के गुवाहाटी में स्थित माँ कामाख्या मंदिर का एक प्रमुख और ऐतिहासिक धार्मिक उत्सव है। यह मेला हर साल जून महीने में आयोजित होता है और पूरे भारत, विशेष रूम से असम के लोगों के लिए एक विशेष महत्व रखता है। इस मेले के दौरान लाखों श्रद्धालु मंदिर में एकत्र होते हैं, जो देवी माँ के आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए विभिन्न पूजा-अनुष्ठान करते हैं। अम्बुबाची मेला हिन्दू धर्म के शाक्त संप्रदाय से जुड़ा हुआ है, और यह शाक्त परंपरा (अर्थात भगवती शक्ति की उपासना) में विश्वास करने वाले भक्तों के लिए विशेष रूप से पवित्र मेला होता है।

अम्बुबाची मेला का इतिहास

अम्बुबाची मेला का इतिहास बहुत पुराना है । यह मेला हिन्दू धर्म के शाक्त संप्रदाय और तंत्र-मंत्र की पूजा पद्धतियों से जुड़ा हुआ है। अम्बुबाची मेला देवी माँ कामाख्या के विशेष पूजा के समय मनाया जाता है, जब देवी माँ का गर्भ विश्राम करता है। यह वह समय होता है जब देवी की पूजा और मंदिर के द्वार बंद कर दिए जाते हैं। हिन्दू धर्म में यह माना जाता है कि इस समय देवी माँ की शक्तियाँ पूरा तरह से पृथ्वी पर उतरती हैं, और यह अवसर अत्यधिक पवित्र और महत्वपूर्ण होता है ।

उमानंद मंदिर

यह धार्मिक द्वीप स्थल जून में घूमने के लिए सही है। उमानंद द्वीप असम में सबसे अच्छे पर्यटन स्थल में से एक है। अंग्रेजों द्वारा इसे पीकॉक द्वीप भी कहा जाता है, इस छोटे से द्वीप की प्रसिद्धि ब्रह्मपुत्र नदी के बीच में स्थित इसके स्थान और इस तथ्य के कारण है कि यह गुवाहाटी से आसानी से पहुंचा जा सकता है। यह द्वीप दुनिया क सबसे छोटे द्वीपों में से एक है और इसमें भगवान शिव को समर्पित प्रसिद्ध उमानंद मंदिर है। यह असम में घू मने लायक मशहूर जगहों में से एक है।

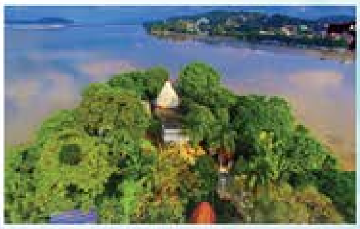

वशिष्ठ आश्रम

वशिष्ठ मंदिर असम में गुवाहाटी नगर दिसपुर स्थित एक हिन्दू मंदिर है । मान्यता है कि यहां शिव को समर्पित मंदिर की स्थापना वैदिक काल में महऋषि वशिष्ठ ने की थी और यहाँ उनका आश्रम था । यह मेघालय की सीमा के समीप है। यहाँ से कई जलधाराएँ आती हैं। गुवाहाटी के दर्शनीय स्थलों में गुरु वशिष्ठ के आश्रम देखने की जिज्ञासा गुवाहाटी आने वाले प्रत्येक पर्यटक की होती हैं। गुरु वशिष्ठ को हिन्दू धर्म के महाग्रंथ रामायण लिखने का श्रेय जाता हैं। यह माना जाता हैं कि गुरु वशिष्ठ ने इस आश्रम का निर्माण किया था और अपने जीवन की अंतिम सांस भी इसी आश्रम में ली थी।

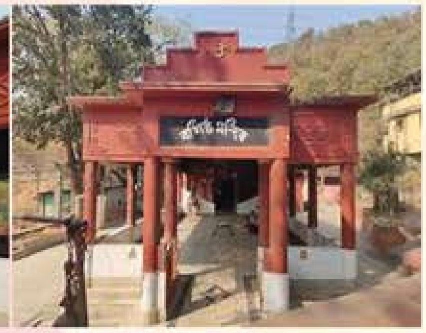

श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र

मध्यकाल के कवि, नाटककार और समाज सुधारक के रूप में पहचाने जाने वाले श्रीमंत शंकरदेव के नाम पर बना शंकरदेव कलाक्षेत्र गुवाहाटी में एक सांस्कृतिक संस्थान है। असम की संस्कृति, कला और परंपरा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इस परिसर का निर्माण किया गया था। यह गुवाहाटी शहर के पंजाबाड़ी क्षेत्र में स्थित है। यह एक ही परिसर में पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र को दर्शाते हुए एक कला और सांस्कृतिक संग्रहालय है। यहां कला-संस्कृति का इतिहास बहुत ही सुंदर ढंग से प्रदर्शित की गई है।

कलाक्षेत्र प्रवेश द्वार

कलाकारों की प्रतिकृतियां

गुवाहाटी क्षेत्रीय विज्ञान केंन्द्र

गुवाहाटी की क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र गुवाहाटी शहर के जवाहर नगर खानापारा में स्थित है। जिसमे कई दुर्लभ उपकरण, मशीनरी, डेमो प्रयोग सेटअप, दुर्लभ विज्ञान उपकरण आदि शामिल हैं ।

गुवाहाटी तारामंडल : एक अंतरिक्ष यात्रा

असम आने वाले खगोल विज्ञान प्रेमियों को यह आकर्षण बेहद पसंद आता है। गुवाहाटी तारामंडल हर साल बच्चों और अंतरिक्ष प्रेमियों के लिए अंतरिक्ष अन्वेषण और गतिविधियों के असंख्य अवसरों के साथ बड़ी संख्या में आगंतुकों को आकर्षित करता है। यह उन युवा दिमागों के लिए एक बेहतरीन जगह है जो मजेदार और इंटरैक्टिव तरीके से ब्रह्मांड के बारे में आश्चर्यजनक तथ्य सीखना चाहते हैं। गुवाहाटी तारामंडल असम में देखने के लिए विशेष स्थानों में से एक है। यह लोकप्रिय खगोलीय अनुसंधान केन्द्र लोगों को सूर्य ग्रहण और उल्का वर्षा जैसी दुर्लभ घटनाओं को देखने के लिए कई सेमिनार और प्रदर्शनियों का भी आयोजन करता है ।

''शिखर तक पहुंचने के लिए ताकत चाहिए होती है, चाहे वे माउंट एवरेस्ट का शिखर हो या आपके पेशे का।''
-डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

माजुली द्वीप : सबसे बड़ा नदी द्वीप

माजुली के मनमोहक प्राकृतिक दृश्य इसे असम के शीर्ष पर्यटन स्थलों में से एक बनाते हैं। यह दुनिया का सबसे बड़ा नदी द्वीप है और साथ ही शंकरदेव और माधवदेव द्वारा स्थापित सबसे महत्वपूर्ण सत्रों में से एक है। माजुली द्वीप लगभग 452 वर्ग किमी के क्षेत्र में फैले हुए हैं और इनमें से अधिकांश मानसून के दौरान पानी के नीचे डूब जाते हैं, जिससे कमलाबाड़ी, औनियाती और गरामुर जैसे बड़े द्वीप सतह पर रह जाते हैं। यही कारण है कि मई में गुवाहाटी में घूमने की जगहों में इस जगह की यात्रा करना सबसे अच्छा है। यह निस्संदेह असम में घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है। उल्लेखनीय प्राकृतिक सुंदरता के अलावा, माजुली पक्षी प्रेमियों के लिए भी स्वर्ग है। असम में घूमने के लिए सबसे खूबसूरत जगहों में से एक को देखे बिना असम पर्यटन के साथ छुट्टियाँ अधूरी हैं।

काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान : एक सिंग वाले गैंडे का घर

काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान ग्रह की एक सींग वाले गैंडों की दो-तिहाई आबादी का घर है । इसके अलावा, यह काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान एक विश्व धरोहर स्थल भी है और असम के मुख्य पर्यटन स्थल के मानचित्र पर एक प्रमुख आकर्षण है। एक सींग वाले गैंडे के अलावा यह पार्क हिरण, हाथियों, जंगली भैंसों, चीनी पैंगोलिन, बंगाल लोमड़ियों गिब्बन, सिवेट, स्लॉथ भालू, तेंदुए और उड़ने वाली गिलहरियों जैसे अन्य सुखद आश्चर्यों के कारण अपनी लोकप्रियता हासिल करता है । यह एक बाघ अभयारण्य भी है क्योंकि इसमें रॉयल बंगाल टाइगर्स की एक विशाल आबादी रहती है, जो इसे असम के सबसे महत्वपूर्ण आकर्षण स्थलों में से एक बनाती है यह निश्चित रूप से असम में घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है ।

हाफलोंग हिल : साहसिक चाहने वालों के लिए

असम के सबसे प्रसिद्ध पर्यटक आकर्षणों में से एक, यह आकर्षण पैराग्लाइडिंग और ट्रैकिंग जैसी रोमांचकारी गतिविधियों के लिए लोकप्रिय है। मंत्रमुग्ध कर देने वाली आभा से घिरी यह एक खूबसूरत पहाड़ी है जिसे देखकर आपके होश उड़ जाएंगे। चारों ओर पहाड़ों का दृश्य और हरी-भरी हरियाली आपके बोझिल मन को बेहतर बनाने का एक आदर्श अवसर प्रदान करती है।

शिवसागर : सदियों पुरानी सभ्यता

ऐसा माना जाता है कि शिवसागर सदियों पुरानी सभ्यता का घर है। जबकि यह असम के सबसे आश्चर्यजनक पर्यटन स्थलों में से एक है, यह 1699 से 1788 ईस्वी तक अहोम राजाओं का राज्य भी था। यह प्राचीन शहर न केवल अपनी सुंदर वास्तुकला से बल्कि अपनी प्रमुख विशेषताओं जैसे भव्य शिव, विष्णु, दुर्गा मां मंदिरों के साथ-साथ जॉयसागर, गौरीसागर सहित यहां स्थित सबसे बड़े मानव निर्मित टैंकों में से एक के कारण अपने शाही वैभव की कहानियां कहता है।

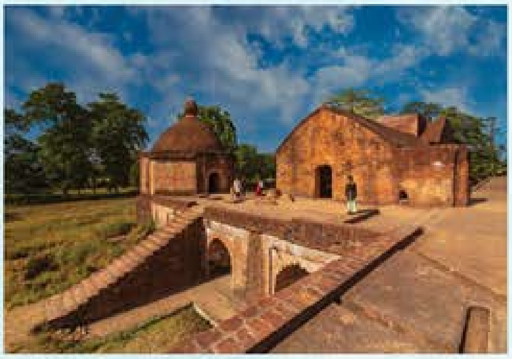

''अगर हमें हिंदुस्तान को एक राष्ट्र बनाना है, तो राष्ट्र भाषा हिंदी ही हो सकती है।''

– महात्मा गांधी

डिब्रूगढ़ : भारत का चाय शहर

उत्तर पूर्व भारत के संचार और औद्योगिक केंद्र के रूप में उभरता हुआ डिब्रूगढ़ तेजी से पर्यटकों के बीच लोकप्रियता हासिल कर रहा है। इसका नाम डिब्रू नदी के नाम पर रखा गया है, यह असम का सबसे बड़ा शहर है और अन्य शहरों और कस्बों से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। इसकी प्रचुर वनस्पति और समृद्ध संस्कृति इसे असम में घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक बनाती है। मौसम आने पर बहुत सारे प्रवासी पक्षी डिब्रूगढ़ में आश्रय लेते हैं। कुल मिलाकर रुकने के लिए यह स्थान मनोरम है ।

बंगाईगांव : जीवंत संस्कृति

बंगाईगांव को असम के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन स्थलों में से एक बनने का कारण इसकी जीवंत संस्कृति है। आप बंगाईगांव में अपनी यात्रा के दौरान आकर्षक असमिया संस्कृति और टाउनशिप के बारे में जानें। इसकी प्राकृतिक सुंदरता आपका मन मोह लेगी। प्राचीन और अछूती प्रकृति आपको बंगाईगांव का चक्कर लगाने के लिए आकर्षित करेगी। बंगाईगांव को असम के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन स्थलों में से एक बनने का कारण इसकी जीवंत संस्कृति है। चूँकि यह कामतपुर साम्राज्य की आखिरी राजधानी थी, इसलिए यह राज्य के सबसे महत्वपूर्ण शहरों में से एक है। इसकी प्राकृतिक सुंदरता आपका मन मोह लेगी।

डिगबोई : असम का तेल शहर

डिगबोई, असम के तिनसुकिया जिले का एक शहर है, जिसे असम का तेल शहर कहा जाता है यह तेल शहर के रूप में प्रसिद्ध है। इस शहर में एशिया का पहला तेल कुआँ है। डिगबोई में पहली तेल की खोज 18वीं शताब्दी की शुरुआत में हुई थी। दुनिया की सबसे पुरानी चालू तेल रिफाइनरी भी डिगबोई में ही स्थित है। यहाँ पहली रिफाइनरी 1901 में चालू हुई थी। डिगबोई को भारतीय हाइड्रोकार्बन क्षेत्र की गंगोत्री कहा जाता है। डिगबोई में भारतीय तेल निगम लिमिटेड के असम तेल प्रभाग का मुख्यालय है।

हवाई यात्रा करने वाले पर्यटकों के लिए, डिब्रूगढ़ का निकटतम हवाई अड्डा 65 किमी दूर है। तिनसुकिया का निकटतम रेलवे स्टेशन शहर से 34 किमी दूर है। गुवाहाटी से लगभग 18 रेल गाड़ियाँ चलती हैं जिसमें से 11 गाडियाँ रोज चलती हैं।

डिगबोई ने आजादी के कई सालों बाद भी हमेशा ब्रिटिश संस्कृति को बरकरार रखा है। क्लब जाना, गोल्फ़ खेलना, तैराकी और टेनिस खेलना ज्यादातर डिगबोईवासियों के जीवन का हिस्सा है। असमिया, हिंदी, अंग्रेजी और बंगाली आम तौर पर बोली जाने वाली भाषाएँ हैं। होली, लखीपूजा, कालीपूजा, दुर्गा पूजा, दिवाली आदि त्यौहार यहाँ के लोग मनाते हैं। देहिंग पटकाई राष्ट्रीय उद्यान एक राष्ट्रीय उद्यान है जो असम के डिब्रूगढ़ और तिनसुकिया जिलों में 231.65 किमी (89.44 वर्ग मील) वर्षावन क्षेत्र को कवर करता है। 13 जून 2004 को इसे वन्यजीव अभयारण्य घोषित किया गया था। 13 दिसंबर 2020 को असम सरकार ने इसे राष्ट्रीय उद्यान में अपग्रेड कर दिया । 9 जून 2021 को, असम के वन विभाग ने आधिकारिक तौर पर इसे राष्ट्रीय उद्यान के रूप में अधिसूचित किया। यह देहिंग पटकाई परिदृश्य में स्थित है जो डिप्टरोकार्प-प्रभुत्व वाला निचला वर्षावन है।

वन्यजीवों की जंगल में अठखेलियाँ तथा पर्यटन का आनंद उठाते बच्चे

नींद और मौत

सी.एन. मजूमदार
उप मुख्य बिजली इंजीनियर (पीएस)
मुख्यालय/मालीगांव

मौत एक गहरी नींद ही है
दोनों में अंतर यदि है तो
समानताएँ भी है,
मौत के बाद कोई जागता नहीं
जबकि नींद के बाद आदमी जाग उठता है।

मृत्यु स्थायी है, नींद अस्थायी है,
मृत्यु सभी समस्याओं से पूर्णकालीन मुक्ति है
जबकि नींद अल्पकालीन मुक्ति है
हम रोज थोड़ा-थोड़ा मरते है
नींद के माध्यम से,
परंतु पुनः जीवित हो उठते है
वही जंजालों से भरी जाली संबंधो की दुनियां मे,
कहते है कि हमिंग बर्ड नामक एक पक्षी है
जिसे प्रतिदिन एक नया जीवन मिलता है
जब वह नींद से जागने में सफल होता है
जिस दिन वह नहीं जग पाता, वह दिन उसका
अंतिम दिन होता है
यह एक निरंतर संघर्ष है, स्वयं के अस्तित्व से
उस रिचार्जेबल बैटरी की तरह
जिसे हम रोज चार्ज करते हैं
परंतु क्रमशः दिन प्रतिदिन चार्ज कम समय तक
चलता है, और एक दिन बैटरी निष्क्रिय हो जाती है ।

"स्पर्धा ही जीवन है। उसमें पीछे रहना जीवन की प्रगति को रोकना है।"

– सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

कार्मिक विभाग द्वारा निर्मित लघु फिल्म - “असर”

समीक्षक
कृष्ण प्रसाद गुप्ता
वरिष्ठ अनुवादक
मुख्यालय, मालीगांव

पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के कार्मिक विभाग द्वारा सर्तकता सप्ताह के दौरान भ्रष्टाचार पर बहुत ही सुंदर एक लघु फिल्म का प्रदर्शन किया गया जिसमें बहुत ही सरल एवं सुंदर तरीके से भ्रष्टाचार पर करारा प्रहार करने की कोशिश की गई। इस लघु फिल्म के माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया गया कि थोड़े-से धन के लालच एवं तृष्णा के कारण इंसान कितना गिरता जा रहा है। धन न मिले तो वह कोई भी कार्यालय संबंधी फाइल की मुवमेंट, मंजूरी एवं भुगतान रोक देता है तथा इंसानियत को छोड़कर हैवानियत पर उतर हर वह कार्य जो निंदनीय है करता रहता है। भले ही उसके इस कुकृत्य की वजह से अन्य व्यक्ति तकलीफ, कष्ट एवं पीडा में क्यों न हो उसे फर्क नहीं पड़ता।

पर सही मायने में यदि हम देखें तो फर्क तो उसे पड़ता है पर उसे तत्काल दिखाई नहीं पड़ता । कुछ समय के अंतराल में उसका असर पूरे परिवार पर पड़ता है और उसकी दुर्दशा हो जाती है। शुरुआत में यह असर न दिखे पर अंतत: बुरे कर्म का प्रभाव जरूर पड़ता है।

पवित्र गीता में लिखा है - **''अवश्यमेव भोगाव्यं कृतम कर्म शुभाअशुभम।''** अर्थात इंसान को अपने द्वारा किए शुभ अथवा अशुभ कर्म के फल सुख या दु:ख के रूप में मिलता ही है। धन के लालसा इंसान को कितना नीचे गिरा रहा है पर इंसान गिरना पसंद तो करता है पर ईमानदार रहकर धर्मयुक्त कर्म करना पसंद नहीं करता ।

कार्मिक विभाग द्वारा यह सुंदर प्रस्तुति हमें यह सिखलाती है कि भ्रष्टाचार बहुत ही घातक है स्वयं के लिए भी तथा परिवार के लिए भी। गलत तरीके से कमाया गया धन का दुष्परिणाम परिवार पर दिखाई देने लगता है। परिवार के सदस्यों पर इसका बुरा असर पड़ने लगता है।

भगवान कहते है **''दुखिया को न सताइए दुखियां देगा रोई, जब दुखियां के मुखियों को पता चले तो तेरी गति क्या होई''** - यह कथन को हम सभी को स्मरण रखते हुए अपने जीवन को सार्थक बनाने का प्रयास करना चाहिए ।

कार्मिक विभाग के मुख्य कार्यालय अधीक्षक श्री मंटू कुमार दास द्वारा रचित इस लघु फिल्म के माध्यम से समाज के नजरिये को बदलने का बहुत ही सुदंर प्रयास किया गया है। इस लघु फिल्म में सहायक कार्मिक अधिकारी/कल्याण श्री संतोष कुमार दत्त एवं सर्वश्री किशोर पाठक, मफुजा बेगम, निबेदिता वैश्य, बिपुल डेका, निलोय डेका, करिश्मा हक, डीओपी - मुजामिल हक, सहायक निर्देशक - राहुल सैकिया, संपादक - करन कश्यप, संगीत/डब्बिंग - राहुल सैकिया, कहानी-अभिनाश बोरबोरा, स्क्रिन प्लै/डायलॉग - मंटू कुमार दास ने अपने अभिनय के माध्यम से भ्रष्टाचार पर प्रकाश डालने की कोशिश की है ।

वृद्धाश्रम

उदीप राजबंशी
जूनियर इंजीनियर
यांत्रिक कारखाना, डिब्रूगढ़
मोबाइल नंबर: 9706267852

आँखों में एक आस है
मन में है एक आशा
क्या यही जीवन है?
जिसमें केवल मिली निराशा

हृदय में एक दर्द है
आँखों में है नमी
यही हमारी व्यथा है
क्या रह गई हमारे परवरिश में कमी?

जिनको चलना सिखाया पकड़ के हाथ
उन्होंने छोड़ दिया साथ
क्यूं देखना पड़ रहा ये नाट?
अजीब लगती है ये बात

हारे हम नहीं हैं
अडिग अटल है
करेंगे कुछ नया जीवन में
पूर्णविराम नहीं ये तो प्रारम्भ है

हाथ लड़खड़ाते हैं
कदम डगमगाते हैं
पर चलो जीवन के सफर में
अध्याय एक और बनाते हैं।

**

"जिस विश्व में हम रह रहे हैं, प्रासंगिक बने रहने के लिए भारत के लिए आगे बढ़ने हेतु, पीछे देखना कितना महत्वपूर्ण है ?"

अतुल कुमार मिश्रा
उप मुख्य कार्मिक अधिकारी (औ.सं.)
एवं अध्यक्ष रेलवे भर्ती प्रकोष्ठ
गुवाहाटी

दुनिया में भारत अब सबसे युवा राष्ट्र है, जैसा कि हमारी जनसांख्यिकी कहती है, लेकिन साथ ही हम सबसे पुराने राष्ट्र भी हैं, अगर हम अपने विकास और मानव विकास, संस्कृति, पुरानी लेकिन अभी भी प्रासंगिक परंपरा, जीवन के परिपक्व तरीके आदि के इतिहास को देखें, तो सबसे पहले वर्तमान आधुनिक दुनिया की चुनौतियों की पहचान करना महत्वपूर्ण है, जिसके लिए भारत को अपने इतिहास पर गौर करना चाहिए।

आज की दुनिया का मुख्य मुद्दा आर्थिक स्थिरता है - आधुनिक दुनिया वैश्वीकरण पर आधारित है और हर दशक के अंतराल पर यह मंदी की समस्या का सामना कर रही है, चाहे वह 1996 का एशियाई संकट हो, 2009 की मंदी हो या वर्तमान मंदी। हमारे पास गौरवशाली अर्थव्यवस्था का अतीत है जिसमें हमारे पास 1800 से अधिक वर्षों तक आर्थिक स्थिरता के साथ-साथ विश्व जीडीपी का 24% से अधिक और विश्व व्यापार का 27% हिस्सा था। यह दर्शाता है कि पहले के समय में औद्योगिक विकास का भारतीय तरीका अधिक टिकाऊ, पर्यावरण अनुकूल और समावेशी था, जहाँ असमानता आज के युग की तुलना में कम थी जैसा कि ऑक्सफैम रिपोर्ट बताती है।

इसलिए जब हम फिर से विश्व शक्ति का दर्जा हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं, तो हमें अपने गौरवशाली आर्थिक, समृद्ध सांस्कृतिक इतिहास का अध्ययन करना चाहिए, जो हमें न केवल 5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था से आगे जाने और विश्व अर्थव्यवस्था में अधिक हिस्सा पाने के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित कर सकता है, बल्कि हमें यह भी सिखा सकता है कि हम ग्रामीण/शहरी, गरीब/अमीर या महानगरीय/कस्बाई का विभाजन पैदा किए बिना इसे अधिक समावेशी रूप से कैसे प्राप्त कर सकते हैं। हम भारत में हुए आध्यात्मिक विकास और शोधों से बहुत कुछ सीख सकते हैं, जिसने दुनिया को न केवल बाहरी विकास के बारे में बल्कि मानव के आंतरिक विकास के बारे में भी सिखाया। हमारे पूर्वजों ने एक ऐसा इको-सिस्टम बनाने पर ध्यान केंद्रित किया था जिसमें सभी को दूसरों का सम्मान करते हुए बढ़ने का अधिकार हो। इसीलिए इसे दुनिया का अब तक का सबसे सहिष्णु देश कहा जाता है।

लेकिन हम छोटी-बड़ी ऐतिहासिक गलतियों पर विवाद नहीं कर सकते और इसीलिए हमें अपने इतिहास का अध्ययन रचनात्मक तरीके से करना चाहिए न कि प्रतिक्रियावादी दृष्टिकोण से। जब दुनिया भर में लोग लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे हैं, हम याद रखें कि भारत सबसे पुराना लोकतंत्र है और हमने ही छठीं शताब्दी ईसा पूर्व में प्राचीन गणतंत्र की स्थापना की थी। हमारे पास गणित, शल्य चिकित्सा, रसायन विज्ञान के सबसे पुराने शोध है जो हमें प्रेरित करते हैं कि हम भी अंतरिक्ष, चिकित्सा, परमाणु, आईटी अनुसंधान के क्षेत्र में चमत्कार कर सकते हैं। साथ ही समृद्ध कला, शिल्प, सामाजिक विज्ञान, महान साहित्य, संगीत, वास्तुकला, जिसमें हमारा गौरवशाली अतीत है, के क्षेत्र में दुनिया का नेतृत्व कर सकते है।

डॉ. कलाम ने अपनी पुस्तक **"बियॉन्ड 2020 - ए विजन फॉर टुमॉरोज़ इंडिया"** में लिखा है कि यह संभव है कि भारत आने वाले वर्षों में विकसित हो जाएगा, लेकिन हमारी वृद्धि का कोई मतलब नहीं होगा यदि हम अपनी मूल्य प्रणाली को खो देंगे जो सामाजिक सद्भाव, सहिष्णुता, बड़ों के प्रति सम्मान, प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता, सभी के कल्याण के लिए सर्वोच्च शक्ति में विश्वास रखता है।

-सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिददुःखभाग्भवेत्-

यह हमारे राष्ट्रीय इतिहास और संस्कृति का मूल सिद्धांत है जो हमारे शास्त्रीय ग्रंथों में विश्व को एक परिवार के रूप में मानने की अवधारणा पर आधारित है जिसे बसुधैव कुटुम्बकम कहा जाता है। जब भी किसी राष्ट्र का पुनर्जागरण होता है तो वह अपने अतीत को देखता है, चाहे वह इटली, जर्मनी या जापान जैसे राष्ट्र ही क्यों न हो। यहां तक कि जब हमने अपना स्वतंत्रता संग्राम लड़ा, तब भी हमने अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष के लिए बंकिम, तिलक, अरविंद या गांधी द्वारा दिए गए धर्मयुद्ध और राम राज्य की प्रेरणा लेने के लिए अपने इतिहास को देखा। लेकिन इस प्रक्रिया में थोड़ी सी भी गलती हमारे पुनरुत्थानवाद को 1940 के दशक में हुई सांप्रदायिकता जैसी दूसरी गलती की ओर ले जा सकती है जिसके फलस्वरूप एक महान राष्ट्र का विभाजन हो गया।

इसी तरह, आज जब भारत विश्व व्यवस्था में "नए भारत" के स्लोगन के रूप में अपना नया स्थान तलाश रहा है। हम अपने गौरवशाली अतीत को खोजने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन प्रयास में हम पुनः अपने गौरवशाली मध्यकालीन काल को भी उस महिमामंडन की प्रक्रिया में छोड़ देने की गलती कर रहे हैं और मध्यकालीन भारत के नायकों का भी स्वर्णिम इतिहास में योगदान रहा है, जो वास्तव में कहानी की पूरी तस्वीर नहीं है। अतः अगर हम अपने गौरवशाली अतीत को फिर से पाने के लिए यदि खुद को प्रेरित करने के लिए पीछे देखना चाहते हैं तो यह अच्छा विचार होगा कि यह हमारे किसी भी समुदाय के लिए प्रतिक्रियावादी और प्रतिगामी न हो बल्कि हमें अपने रचनात्मक इतिहास और हमारे महान पूर्वजों की उपलब्धियों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

*****

आधी हथकड़ी

अनुराग मजूमदार
सुपुत्र श्री सी.एन. मजूमदार
उप मुख्य बिजली इंजीनियर (पीएस)
मालीगांव

मेट्रो यात्री पकड़ते हैं जो हैंडल
वह लगती है आधी हथकड़ियों-सी
झूलते हैं लोग जिन पर, लगता है,
शहर ने थाम रखें हो
इंसानों को कुछ गुच्छों में
कुछ हैं मशरूफ अपने एकांत में,
और कुछ मजबूरी की थकान ओढ़ें हैं,
जिनके पास नहीं है कुछ खास,

वे कर रहे हैं दिलासे की तलाश
इन सबमें कुछ बंद नैन
खोज रहे हैं मन का चैन
तलाश है मुक्ति की
भटक रहा है मन,
बदल गई हैं दिशाएं
खो चुकी हैं सारी मंजिलें,
जोड़ने को जिंदगी की कड़ी
रह गई आधी हथकड़ी ।

"मनुष्य की महानता उसके कपड़ों से नहीं बल्कि उसके चरित्र से आंकी जाती है।"

- स्वामी विवेकानन्द

एक चिड़िया

विक्रम सिंह
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
पू.सी. रेलवे, मालीगांव

बैठा था मैं,
गाड़ी के इंतजार में प्लेटफार्म पर,
गाड़ी की छत से ठीक ऊपर एक किनारे ठूंठनुमा
पेड़ से
चूं-चूं की आवाज आई
वह छोटी-सी चिड़िया थी,
शाम होने पर मां के आने का कर रही थी इंतजार,
शायद मां कुछ खाने को ले आये,
वह बैचैन थी
अंधेरा भी अधिक हो गया था
वह शायद भूख से रो रही थी
फिर मुझे याद आया उस होटल
का डस्टबीन,
सोचा वाह..... रे!
ईश्वर जहां से मैं
आ रहा हूं
वहां तो खाने का पूरा भंडार
कचरे में
डाला जा रहा है और यह.....
यह नन्ही चिड़िया एक दाने
और मां का प्यार पाने
कितनी तरस रही हैं,
काश! वह
चिड़िया मेरी बच्ची होती और
मैं उसकी मां ।

द फ्रोज़न रोज़

कमलिका मजूमदार
सहायक बिजली इंजीनियर (कोचिंग)
मुख्यालय, मालीगांव

पत्थरों के बीच जागता हुआ
एक वीरान स्टेशन पर खड़ी है
अकेली-तुम्हारी आत्मजा ।
हाथों में रंग-बिरंगे फूलों की मशाल,
सुबह से सजा रखी है उसने,
सिर्फ तुम्हारे आने की आस में ।

ट्रेन आई, ट्रेन चली गई,
जैसे रोज गुजरती है
लोहे की पटरियों पर ।
हर अजनबी चेहरे में खोजती हैं
वे नन्हीं दो आँखें -
शायद दिख जाए पिता का चेहरा,
शायद मुट्ठी में दबे रंगीन फूल
पा लें अपनी मंजिल ।

माँ कहती हैं, पिता शहीद हुए,
जो एक बार शहीद हो जातें हैं,
वे लौटते नहीं जीवन की किताबों में,
न मिलते हैं इतिहास के पन्नों में ।
वे खोए हुए लोग
अब ट्रेन पर सवार नहीं होते,
हाथ बढ़ाकर फूल नहीं थामते,
गोद में भरकर नहीं उठाते ।

नहीं, नहीं, नहीं ।
मन यह हार कैसे माने ?
वह फूल तो जरूर देगी,
चाहे खरी रहे अंधेरी रातों में ।
लालटेन की लौ टिमटिमाएगी,
और ठीक उसी क्षण -
पिता हाथ पकड़ लेंगे,
कहेंगे, चलो, घूम आएँ दोनों साथ ।

हर जीवन रण में शहीद हुए
पिता के इंतजार में जाग रही हैं
हजारों अनदेखी बेटियाँ ।
अब बस इंतजार है इस घने हिमपात का -
जब बिटियाँ छू लेगी अपने पिता को,
और जन्म लेगा एक बर्फीला गुलाब,
हर आतंक के बाग ढँक देने को ।

करें तो क्या करें

संतोष कुमार दत्त
सहायक कार्मिक अधिकारी
यांत्रिक, मालीगांव

करें तो क्या करें
यह दुनिया के लोग मेरे
समझ से है परे ।

देखूं दूर से तो
लगे सितारे सारे
पास आए तो
हो जाते हैं बिजली की तारे ।
छूने से झटका ऐसे मारे
बदन से निकल जाती जैसे
तुंरत हवा सारे
करें तो क्या करें ।।

मां कहती है
सुख और दुःख
अपने नसीब से मिलता है
सुख के पीछे दुनिया भागे
पर सुख खोजते-खोजते
केवल दुःख ही मिलता है
करें तो क्या करें ।।

पिजाती कहते थे
सभी समस्याएं होती हैं
लाल बत्ती की तरह
कुछ देर ठहर जाओ
तो बन जाता है हरा ।।

दादी कहती थी
रोने वाले महलों में भी रोते हैं
और किस्मत में खुशियां हों तो
झोपड़ी में भी हंसी गुंजती हैं ।।

दादाजी कहा करते थे
जिसने संसार को बदलने की
कोशिश की
वह हार गया
और जीता वह
जिसने खुद को बदल लिया ।
करें तो क्या करें ।।

वेदना

मनीषा शर्मा
कार्यालय अधीक्षक
कार्मिक विभाग, मुख्यालय,
मालीगांव

तुमने जो दी वेदना
हे मेरे प्रियवर
तुमने जो दिया उपहार
मेरे हृदय में समाकर
पीछे मुड़कर देखा क्या तुमने कभी ?

किसी आहत हृदय के अंतर्नाद को
क्या सुना है तुमने कभी ?

किसी के दग्ध हृदय को क्षत-विक्षत
होते देखा है कभी ?

तुम्हारी बातें, वो हर शब्द
तुम्हारा निर्भीक वार्तालाप
जब हृदय में गूंजता है मेरे
कब तुम्हारे स्वर की लहरें
नयनों से अश्रु धारा के समान बहती हैं ।

तुम्हारी आशा भरी बातें
जब भी याद आती हैं
मैं नदी, सागर या कविता बन जाती हूँ
तुम्हारी यादें मेरी लहरों में सब लुप्त हो चुकी हैं
रह गयी है मात्र
तुम्हारी यादों की वेदना........

मैं कवि नहीं हूँ

विजय कुमार दास
मुख्य कार्यालय अधीक्षक, (सा.)
सीनियर सेक्शन इंजीनियर (कार्य)
नामबाड़ी, मालीगांव

मैं कवि नहीं हूँ,
न ही समझता कवियों की भाषा ।
मैं तो इस दुनिया में एक सुखे
वृक्ष की तरह हूँ जो शायद ही
निकलेंगे इसमें हरा पत्ता ।
कुछ लोग एकटक से
मुझको देखते रहते,
यह वृक्ष कौन से काम में आएगा
कुछ लोग कान में फुस-फुस करते
अरे यार इस वृक्ष को
लेने से तो घाटे में पड़ जायेगा ।
मैं कवि नहीं हूँ,
न ही समझता कवि की भाषा ।
फिर भी सुखे वृक्ष होने के नाते
इस धरती के सीने में
समाया रहना चाहता हूँ ।
मैं उस समय का इंतजार करता हूँ
अच्छे-अच्छे फर्नीचर के काम आऊँगा
या न आऊंगा,
लेकिन शममान में एक दो कवियों
के मरने के बाद उनके चिता पर
तो जलाया जाऊँगा ।
मैं कवि नहीं हूँ
न ही समझता कवियों की भाषा ।

बादलों के प्रदेश शिलांग में....

रीता सिंह 'सर्जना'
तेजपुर, असम

मेघालय यानी बादलों का घर, जी हाँ, इस बार हमने निश्चय किया था कि इस 'समर वेकेशन' पर बच्चों को बादलों के प्रदेश मेघालय घुमाने ले चलेंगे । मेघालय उत्तर-पूर्व भारत का एक ऐसा राज्य हैं जो स्त्री प्रधान हैं। इस राज्य को खासी हिल्स के नाम से भी जाना जाता हैं। बचपन में सुना था कुछ लोग शिलांग को मिनी लंडन भी कहते हैं। क्रिश्चियनटी का प्रभाव यहाँ ज्यादा देखने को मिलता हैं। यहाँ खासी जनजाति के लोग रहते हैं। साथ ही यहाँ हिंदुस्तान के कोने-कोने से लोग आकर बसे हुए हैं। कोई नौकरी के सिलसिले में तो कोई व्यवसाय करते हैं।

13 जून 2012 की सुबह हमने शिलांग के लिए प्रस्थान किया । तेजपुर से शिलांग की दूरी लगभग 250 कि.मी. है जबकि गुवाहाटी से लगभग 100 कि.मी. हैं। हमारी गाड़ी दोनों तरफ के पहाड़ी जंगलों को चीरते हुए आगे बढ़ने लगी। उत्तर-पूर्व भारत की खासियत ही यह हैं कि यहाँ हर मौसम में चारों ओर हरियाली देखने को मिलती है। हालांकि यहाँ भी जंगलों की अवैध कटाई को हम नकार नहीं सकते। फिर भी यहाँ की मनोरम प्राकृतिक छटाएं हमें आकर्षित किये वगैर नहीं रहती। कल-कल करती पहाड़ी झरने, बादलों से गुजरते मनोरम दृश्य, पर्यटकों को आकर्षित किये बिना नहीं रहता। आपको रास्ते भर गाँव से आई पहाड़ी महिलाओं को चाय स्टाल में चाय, सिजिनेबल फल (अनारस, प्लम, संतरा आदि) सब्जियां (आर्गेनिक) तथा सुपारी पान बेचती नजर आएगी। हमारी गाड़ी 'बड़ा पानी' डेम से गुजरती हुई शिलांग की और आगे बढ़ने लगी। ज्यो-ज्यो गाड़ी ऊपर चढ़ने लगी त्यों-त्यों गर्मी का आभास कम होने लगा। क्योंकि मेघालय एक पहाड़ी प्रेदश हैं। शिलांग जैसे हिल स्टेशन पर आकर वैसे भी मन प्रफुल्लित हो जाता हैं । बच्चे तो सिक्किम की याद करने लगे, पिछले साल ही हमने वहाँ का सैर किया था। दोनों ही पहाड़ी क्षेत्र हैं। मगर दोनों प्रदेशो में बहुत फर्क हैं। करीब साढ़े तीन बजे हम शिलांग के सैनिक आरामगाह में पहुँच गए जहाँ पतिदेव ने पहले से ही कमरा बुक करा रखा था।

बादलों का प्रदेश-मेघालय, जिसकी राजधानी हैं शिलांग जो पूर्वी खासी हिल्स का एक जिला हैं। कहा जाता हैं कि शिलांग का नाम एक शक्तिशाली देवता से ली गई है। यह समुद्र तल से 1491 की ऊँचाई में स्थित हैं। इस खूबसूरत हिल स्टेशन में पहुँचने के लिए गुवाहाटी से बसे और किराए की गाड़िया चलती है। इस जिले में घूमने के लिए कई मनोरम जगहें हैं ।

शिलांग पहुंचकर हम जल्दी से फ्रेश होकर वार्ड लेक के लिए निकल पड़े। 'वार्ड लेक' शहर के बीचो-बीच स्थित सर विलियम वार्ड नामक व्यक्ति के नाम से निर्मित झील हैं। वार्ड लेक छोटा मगर साफ सुथड़ा है । यहाँ नौका विहार की व्यवस्थाएं भी है । लेक के ऊपर एक छोटा सा पुल है जिसके नीचे हँस के झुण्ड का तैरना और सैकड़ों मछलियों का झुण्ड देखते ही बनता है। जैसे स्वर्ण मंदिर के तालाब में मछलियों का झुण्ड दिखता है। पर्यटक उन मछलियों को जब मुरी (चावल से बनता है) बिखेर देता हैं तो मछलियाँ उसे चुगने टूट पड़ते हैं। यह देख बच्चे तो बहुत खुश हो गए। मेरी बगल से गुजरती एक खासी महिला से जब मैंने कहा - आपके साथ एक तस्वीर खीचना चाहती हूँ तो वह सहर्ष तैयार होकर मेरे सामने खड़ी हो गई । पच्चीस साल बाद मैं शिलांग आई थी। वार्ड लेक में कुछ समय बिताने के बाद हम यहाँ के सबसे बड़ा चर्च कैथेड्रल कैथोलिक चर्च देखने निकल पड़े। शिलांग के अन्दर सफर करना हो तो इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि यह रूट वन वे हैं या नहीं, क्योंकि अगर एकबार वन वे में घुस गए तो फिर लौटकर आने में काफी घूमना पड़ता हैं । खैर हम आखिर शहर के दिल में बसी कैथेड्रल चर्च में पहुँच ही गए। उसवक्त चर्च के अंदर प्रार्थना चल रही थी । हम भी चुपचाप बैठकर थोड़ी देर प्रार्थना करने लगे तथा कुछ देर बाद लौट आये । मुझे गोवा के चर्चों की याद हो आई। जब नव लेखक शिविर में भाग लेने हेतु पहुँची थी । इस चर्च की खूबसूरती देखते ही बनती हैं।

शाम ढल चुकी थी । हम वापस सैनिक आरामगाह लौट आये, जहाँ मेरी साहित्यिक मित्र मंजु लामा अपने पतिदेव के साथ हमारा इंतजार कर रही थी। मंजू लामा नेपाली और हिंदी दोनों भाषाओं में कलम चलाती हैं। उनसे मिलकर खुशी हुई, कुछ देर के वार्तालाप पश्चात वे चली गई । दिन भर के थकान से निजाद पाने के लिए हम भी रात्रि भोजन के पश्चात सोने चले गए क्योंकि सुबह जल्दी हमे भी उठना था।

शिलांग आये और चेरापूंजी न जाए तो यह यात्रा अधूरी कहलाएगी। अतः दूसरी सुबह यानी 14.06.2012 की सुबह 7.30 बजे हम विश्व के सबसे ज्यादा बारिश होने वाली जगह चेरापूंजी के लिए रवाना हुए। चेरापूंजी पहुँचने से पहले रास्ते में ही कई दर्शनीय स्थल हैं, हम उसे देखते हुए आगे बढ़ने लगे। शहर से 10 कि.मी. की दूरी पर 1965 मीटर ऊंचाई पर शिलांग पिक स्थित हैं। यह स्थान पिकनिक स्पॉट के लिए भी मशहूर है। यहाँ की ऊंचाई से शिलांग का नजारा देखकर पर्यतक आनंदित हो उठते हैं, क्यों न हो व्यस्त जिंदगी से कुछ पल प्रकृति के साथ बिता पाने की खुशी किसे नहीं होगी। हम कुछ देर उन नजारों को निहारते रहे जो हमारे मन को ही नहीं आँखों को भी सुकून पहुंचा रही थी।

हमारा अगला पड़ाव एलिफेंटा फॉल था, जो शहर से 12 कि.मी. की दूरी पर था, कहा जाता है कि एलिफेंटा फॉल का आकार हाथी के मस्तक जैसा दिखाई देता था, मगर कहा जाता हैं एक बार भूकंप के जोर झटके के कारण अपना आकार खो दिया, परन्तु फिर भी खूबसूरत नजारे आज भी पर्यटकों को आकर्षित किये बिना नहीं सुकून देता हैं। ऐसा ही अनुभव यहाँ की व्यवस्था भी हैं। इसके अलावा कैप्टेन विलियाम संगमा राजा संग्रहालय, स्वदेशी, संस्कृति के लिए डोन बोस्को सेंटर, गोल्फ कोर्स आदि जगहों को देख सकते हैं, हाँ यदि आप पेड़-पौधे आपको आकर्षित किये बिना नहीं रहती। वैसे फूलों को देखने के लिए उपयुक्त समय हैं अप्रैल और अक्टूबर का महिना।

हमारी गाड़ी अब चेरापूंजी की तरफ भाग रही थी। मनोरम पहाड़ी छटा देखते ही बन रहा था। पर्यटकों की आवाजाही लगी हुई थी। सच कहा जाए तो सही मायनों में चेरापूंजी बादलों का प्रदेश हैं। हमारी गाड़ी बादलों को चीरती हुई आगे बढ़ रही थी । घाटी में कुछ जगह धुंध से भरा था तो कुछ जगह जुरासिक फिल्म की याद दिलाती, घने जंगलों से घिरी हरा-भरा दृश्य आँखों को सुकून पहुंचा रही थी। हम रुक-रुक कर दृश्यों का आनंद लेते हुए अपने कैमरों में सुखद क्षणों को कैद करते हुए आगे बढ़ते गए। चेरापूंजी 4,500 फिट की ऊंचाई पर स्थित हैं ।

चेरापूंजी को विश्व में सबसे ज्यादा बारिश रिकार्ड के लिए जाना जाता है। चेरापूंजी की वार्षिक औसत वर्षा 10,871 मिली मीटर हैं। यहाँ मई से सितम्बर तक भारी वर्षा रहती हैं। तत्पश्चात अक्टूबर से वहाँ का मौसम अच्छा हो जाता हैं। उस वक्त पर्यटक वहां पहुंचकर प्रकृति का आनंद उठा सकते हैं। वाकई प्रकृति की खूबसूरती वही पहुँचकर कर सकते हैं । हम ज्यो-ज्यों चेरापूंजी पहुँचने लगे त्यों-त्यों तेज बारिश होने लगी। फलस्वरूप हम घाटी के कुछ खूबसूरत दृश्यों का अवलोकन नहीं कर पाए। बारिश की वजह से मवस्मई गुफा पहुंचकर भी हम गुफा के अन्दर नहीं जा पाए क्योंकि गुफा के अन्दर पानी भरा था। खैर हम फिर भी बहुत खुश थे इन वादियों में शांति से कुछ पल बिता पाने के लिए। इस तरह शिलांग ट्रीप की खूबसूरत यादों को दिल में संजोए हम चेरापूंजी से सीधे तेजपुर के लिए रवाना हो गए ।

सेवेन सिस्टर्स वाटर फॉल, मेघालय

डॉकी नदी, मेघालय

एक ग़ज़ल .... महसूस करें हर शेर को

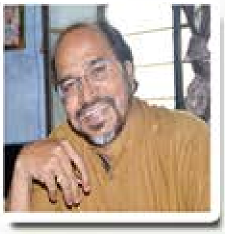

कैलाश मण्डेला
गांधीपुरी, साहपुरा, राजस्थान

अहसानों पर उनकी दावेदारी है
सब कुछ अपना करने की तैयारी है

खुदगर्ज़ी की आदत गर हो जाए तो
हक़ की बातें लगती फिर मक्कारी है

चुप्पी को हरगिज़ कमज़ोरी मत मानो
ख़ामोशी में भी अपनी ख़ुद्दारी है

हमने उनको माना हरदम अपना ही
पर उनकी बगलों में अब दोधारी है

सांपों को पालो पोसो चाहे जितना
डसना उनका फिर भी रहता जारी है

सच कहने की कीमत मिलती सच्चों को
इल्ज़ामातों की पूरी अय्यारी है

मालिक हो तो ख़िदमतगारों को समझो
तबीयत से जो करते ताबेदारी है

मण्डेला चोरी करता है रिश्तों की
उनकी अहसासों पर पहरेदारी है।

दिवाली

चन्द्रकान्त तिवारी "राही"
नई दिल्ली

रात की मुट्ठी में...
सुबह भी है...
जरूरत है, पहले..
ज़ी भर के अंधेरा तो देख लो..
ग़मों की बादल हैं छायी आज..
तो, खुशियां भी लौटेगी..
जरूरत है, पहले..
अभावों की जिंदगी तो जी लो..
चाहत है ग़र..
तमन्नाओं की जिंदगी... ..
तो मिलेगी जरूर..
पहले मंजिल के लिए..
जिद्द तो कर लो.. ...
तेरे सोच की..
आएगी दिवाली...
दिये भी जलेंगे...
खुशियां भी होगीं...
पहले अमावस की.....
अंधेरी रात तो देख लो....

मुख्यालय की गतिविधियां

पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के महाप्रबंधक ने वंदे भारत एक्सप्रेस के यात्रियों से की बातचीत

उनके बहुमूल्य प्रतिक्रिया और सुझाव लिए

पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के महाप्रबंधक श्री चेतन कुमार श्रीवास्तव ने 17जुलाई, 2024 को गुवाहाटी - न्यूजलपाईगुड़ी वंदे भारत एक्सप्रेस का गहन निरीक्षण किया।

महाप्रबंधक ने यात्रियों से ट्रेन यात्रा के दौरान आमतौर पर होने वाली समस्याओं के बारे में चर्चा की और कोचों के अंदर साफ-सफाई, शौचालयों और सेवा प्रदाताओं के व्यवहार के बारे में फीडबैक भी लिया। कई यात्रियों ने बताया कि पिछले कुछ सालों में ट्रेनों में यात्रा करने के अनुभव में काफी बदलाव आया है। ट्रेनों के अंदर साफ-सफाई, शौचालय, एसी आदि सहित यात्री सुविधाओं में भी काफी सुधार हुआ है। महाप्रबंधक ने आगे कहा कि वह चाहते हैं कि हर यात्री को अपनी यात्रा के दौरान अच्छा अनुभव मिले।

महाप्रबंधक ने वंदे भारत एक्सप्रेस की ऑन-बोर्ड खानपान सेवाओं की गुणवत्ता के बारे में यात्रियों से विशेष रूप से पूछताछ की। उन्होंने यात्रियों को उनके फीडबैक साझा करने के लिए धन्यवाद दिया और उन्हें बेहतर सेवाएं प्रदान करने के लिए भारतीय रेल की प्रतिबद्धता के प्रति आश्वस्त किया।

महाप्रबंधक ने सेमी-हाई स्पीड ट्रेन के परिचालन के दौरान चालक दल की सतर्कता की जांच करने के लिए गुवाहाटी से न्यू बंगाईगांव की अपनी यात्रा के दौरान वंदे भारत एक्सप्रेस में फुटप्लेट निरीक्षण भी किया।

रेल यात्रियों से रूबरू होते महाप्रबंधक, पू.सी.रेलवे

पूर्वोत्तर सीमा रेलवे ने राष्ट्र का 78 वां स्वतंत्रता दिवस मनाया
कनेक्टिविटी, संरक्षा और स्थिरता में वृद्धि को किया प्रदर्शित

राष्ट्र का 78वां स्वतंत्रता दिवस पूर्वोत्तर सीमा रेलवे द्वारा अपने क्षेत्राधिकार में धूमधाम और भव्यता के साथ मनाया गया। मुख्य कार्यक्रम मालीगांव स्थित एनएफआरएसए परिसर में हुआ,जहां पू. सी. रेलवे के महाप्रबंधक श्री चेतन कुमार श्रीवास्तव ने रेल परिवार के सदस्यों सहित बड़ी संख्या में लोगों की उपस्थिति में राष्ट्रीय ध्वजारोहण किया। समारोह में आरपीएफ की टुकड़ियों, प्रादेशिक सेना, नागरिक सुरक्षा,भारत स्काउट्स एवं गाइड्स तथा स्कूली बच्चों द्वारा उत्कृष्ट गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। पू. सी. रेलवे/निर्माण संगठन ने भी 78वां स्वतंत्रता दिवस मनाया। महाप्रबंधक/पू. सी. रेलवे (निर्माण) के कार्यालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम में श्री अरुण कुमार चौधरी, महाप्रबंधक/पू. सी. रेलवे (निर्माण) ने राष्ट्रीय ध्वजारोहण किया। पू. सी. रेलवे के सभी पांच मंडलों- तिनसुकिया, लामडिंग, रंगिया, अलीपुरद्वार और कटिहार में भी स्वतंत्रता दिवस मनाया गया, जहां संबंधित मंडल रेल प्रबंधकों ने राष्ट्रीय ध्वजारोहण किया।

पू.सी.रेलवे/मुख्यालय में स्वतंत्रता दिवस समारोह की झलकियाँ

राजभाषा गतिविधियाँ

पूर्वोत्तर सीमा रेलवे राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं कार्यान्वयन में हमेशा तत्पर हैं। राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2024 के दौरान राजभाषा पखवाड़ा के उपलक्ष्य में की गई प्रतियोगिताओं एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम की झलकियां

दिनांकः 20-09-2024 को आयोजित हिंदी गीत एवं गज़ल गायन प्रतियोगिता का दृश्य

दिनांकः 23-09-2024 को आयोजित हिंदी लघु कथा पाठ प्रतियोगिता का दृश्य

दिनांकः 24-09-2024 को आयोजित हिंदी वाक् प्रतियोगिता का दृश्य

दिनांक: 25-09-2024 को आयोजित अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए प्रश्नमंच प्रतियोगिता का दृश्य

दिनांक 30-09-2024 को महाप्रबंधक की अध्यक्षता में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक एवं पुरस्कार वितरण समारोह का दृश्य

दिनांक: 30-09-2024 को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह का दृश्य

दिनांकः 30-09-2024 को जोनल मुख्यालय में आयोजित नाटक प्रतियोगिता की झलकियां

इंजीनियरी विभाग, मुख्यालय द्वारा प्रस्तुत नाटक
'महारानी की जय'

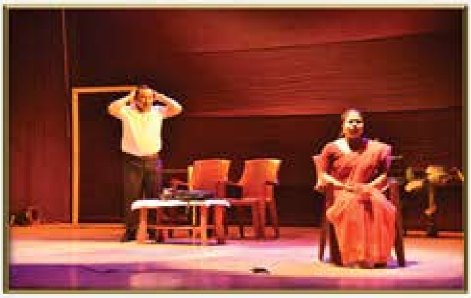

कार्मिक विभाग द्वारा प्रस्तुत नाटक
'चप्पल'

तिनसुकिया मंडल द्वारा प्रस्तुत नाटक
'बमानी गांव की क्रोधित लड़की'

अलीपुरद्वार मंडल द्वारा प्रस्तुत नाटक
'एक और द्रौणाचार्य'

मुख्यालय मालीगांव, राजपत्रित शाखा द्वारा प्रस्तुत नाटक
'लालच'

राजभाषा विभाग, मुख्यालय मालीगांव द्वारा

दिनांक: 30-09-2024 को आयोजित क्षेत्रीय हिंदी नाटक प्रतियोगिता में मंचित किए गए नाटकों के ट्रेलर्स

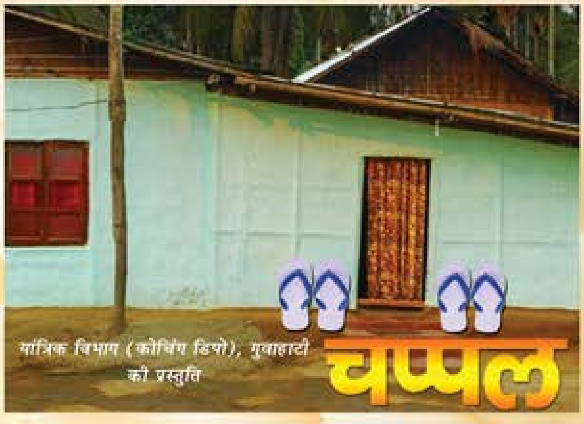

नाटक, जीवन की झलक है, जहां किरदार निभाते हुए, हम सुख-दुख के रंगमंच पर चलते हैं और हर पल एक नया अध्याय लिखते हैं।

राजभाषा नियम - 1976

हिंदी में प्रवीणता

यदि किसी कर्मचारी ने-

(क) मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिंदी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है; या

(ख) स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिंदी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया था; या

(ग) यदि वह इन नियमों के उपाबद्ध प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है।

हिंदी का कार्यसाधन ज्ञान

यह समझा जाएगा कि किसी कर्मचारी को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है, यदि उसने : -

(क) मैट्रिक परीक्षा या उसके समतुल्य या ऊँची परीक्षा हिंदी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है या

(ख) केंद्रीय सरकार के हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है या यदि केंद्रीय सरकार द्वारा किसी विशिष्ट पद के संबंध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है तो यह परीक्षा उतीर्ण कर ली है या

(ग) केंद्रीय सरकार द्वारा इस बारे में विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है, या

(घ) वह राजभाषा नियम के संलग्न प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

बिजली बचाओ

उर्जा संरक्षण हेतु उपाय

विद्युत केतली

- जितना पानी चाहिए उतना ही गर्म करें।
- स्वचालित शट ऑफ बटन और गर्मी प्रतिरोधी हैंडल वाली इलेक्ट्रिक केतली खरीदें।
- उबलते पानी और सिरके को मिलाकर बिजली की केतली को साफ करें क्योंकि गंदी केतली अधिक ऊर्जा की खपत करती है।

कम्प्यूटर

- आवश्यकता न होने पर अपने कंप्यूटर को बंद कर दें।
- अगर कंप्यूटर को 'चालू' छोड़ना ही है तो मॉनिटर को 'बंद' कर दें। यह डिवाइस अकेले ही सिस्टम की आधी से ज़्यादा ऊर्जा का इस्तेमाल करती है।
- उपयोग में न होने पर कंप्यूटर को स्लीप मोड में सेट करें। इससे 40% बिजली की बचत होगी।
- जब उपयोग में न हो, तो लैपटॉप, सेलफोन और डिजिटल कैमरों के बैटरी चार्जर को बंद/अनप्लग करें और ऊर्जा की बचत करें।

कपड़े धोने की मशीन

- कपड़ों को हमेशा पूरी क्षमता के साथ ही धोएं।
- इलेक्ट्रिक ड्रायर के बजाय प्राकृतिक रूप से सुखाने को प्राथमिकता दें।
- **स्टार रेटेड अनुप्रयोगों का उपयोग**

- ऊर्जा की खपत के साथ-साथ कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (बीईई) के द्वारा अनुमोदित उच्च स्टार रेटिंग वाले विद्युत उपकरण खरीदें।

लाइटिंग सिस्टम

- खिड़कियों और अन्य खुले स्थानों से प्राकृतिक प्रकाश के उपयोग को प्राथमिकता दें।
- जब जरूरत न होतो लाइट स्विच बंद कर दें।
- ट्यूब लाइट फिटिंग और लैंप को नियमित रूप से साफ करें क्योंकि गंदे लैंप कम प्रकाश को परावर्तित करते हैं और इससे 50% तक प्रकाश की बर्बादी होती है।
- कई स्वचालित उपकरण ऊर्जा बचाने में मदद कर सकते हैं जैसे कि इन्फ्रा-रेड सेंसर, मोशन सेंसर, स्ट्रीट और रोड लाइट के लिए स्वचालित टाइमर, डिमर्स आदि का उपयोग स्वचालित रूप से लाइटिंग सर्किट को चालू/बंद करने के लिए किया जा सकता है।
- टास्क लाइट का उपयोग करें, जो प्रकाश को उस स्थान पर केंद्रित करती है जहाँ इसकी आवश्यकता होती है।

कूलर और पंखें

- पंखों के लिए इलेक्ट्रॉनिक रेगुलेटर का उपयोग करें।
- जब आवश्यकता न हो तो पंखे का स्विच 'ऑफ' करें।
- बेहतर दक्षता के लिए सीजन से पहले पंखे और कूलर की मरम्मत करवाएँ।

- बिजली और पानी की बचत के लिए कूलर पंप में स्वचालित 'चालू'/ 'बंद' टाइमर लगाएँ।
- पारंपरिक पंखों की बीएलडीसी पंखों का इस्तेमाल करें।
- **कमरे के एयर कंडीशनर**

- गर्मी से बचाव के लिए पंखे का इस्तेमाल करें।
- कमरे के वॉल्यूम के अनुसार एयर कंडीशनर की क्षमता चुनें।
- फॉल्स-सीलिंग लगाकर एयर कंडीशनिंग वॉल्यूम को ऑप्टिमाइज़ करें।
- एयर कंडीशनर वाले कमरे को एयर सील किया जाना चाहिए।
- एसी वाले कमरे में गर्मी सोखने वाली सामग्री न रखें।
- एसी वाले कमरे में डोर क्लोजर का इस्तेमाल करें।
- कमरे से बाहर निकलने से आधे घंटे पहले एसी यूनिट को 'बंद' कर दें।
- एसी एयर फिल्टर और कंडेनसर कॉइल को नियमित रूप से साफ करें।
- कम से कम खर्च में अधिकतम आराम पाने के लिए एयर कंडीशनर के थर्मोस्टेट को 25°C (77°F) पर सेट करें।
- कमरों, खिड़कियों और दीवारों पर छाया देकर 40% तक ऊर्जा बचाई जा सकती है। दिन के सबसे गर्म सूरज को इमारत से दूर रखने के लिए पेड़, झाड़ियाँ लगाएँ।

फ्रिज

- फ्रिज को गर्मी के स्रोतों से दूर रखें।
- गर्म भोजन को फ्रिज में न रखें।
- फ्रिज के कंप्रेसर और कंडेनसर कॉइल को ठंडा करने के लिए फ्रिज के चारों ओर लगातार हवा के प्रवाह के लिए पर्याप्त जगह दें।
- दरवाजा न खुले न छोड़ें और नही बार-बार खोलें।
- खराब फ्रिज का इस्तेमाल न करें। इसे बिजली की आपूर्ति से डिस्कनेक्ट करें।
- सुनिश्चित करें कि रबर डोर सील साफ और टाइट हो।
- फ्रीजर कम्पार्टमेंट को नियमित रूप से डीफ्रॉस्ट करें।

वाटरहीटर

- गर्मी के नुकसान को कम करने के लिए गर्म पानी के पाइप पर थर्मल इन्सुलेशन प्रदान करें।
- गर्म पानी की लाइनों के लिए उचित ग्रेड प्लास्टिक पाइप का उपयोग करना पसंद करें।
- थर्मोस्टेट को कम सेटिंग पर सेट करें यानी 60 डिग्री सेल्सियस के बजाय 50 डिग्री सेल्सियस। इससे उच्च सेटिंग पर उपयोग की जाने वाली ऊर्जा का 20% तक की बचत होगी।
- स्टोरेज वाटर की जगह इंटेंट गीजर का इस्तेमाल करें।

माइक्रोवेव ओवन

- माइक्रोवेव, विशेष रूप से कम मात्रा में भोजन पकाने के समय को कम करके, नियमित ओवन की तुलना में 50% तक ऊर्जा बचाता है।

- माइक्रोवेव ओवन में बड़े और मोटे आइटम को बाहरी तरफ़ रखें क्योंकि माइक्रोवेव बाहरी किनारे से केंद्र की ओर भोजन पकाते हैं।
- ओवन को फुल लोड पर इस्तेमाल करें। ओवन को बेकार में चलाना बंद करें।

सामान्यबिंदु

- सभी कूलिंग और हीटिंग उपकरणों में थर्मोस्टेट का उपयोग किया जाना चाहिए।
- घर की वायरिंग में जोड़ों और ढीले कनेक्शन से बचें।
- सभी घरेलू उपकरणों को अर्थ किया जाना चाहिए।
- जितना संभव हो सके सौर ऊर्जा का उपयोग करें।
- पूर्णिमा की रातों में, चांदनी का उपयोग किया जा सकता है और स्ट्रीट लाइट बंद की जा सकती है।
- अप्रत्यक्ष/फैंसी/सजावटी प्रकाश व्यवस्था से बचें।
- कमरे के अंदरूनी हिस्से को सफेद/हल्के रंगों से रंगा जाना चाहिए और छत को चूने से रंगा जाना चाहिए जिससे कमरे के अंदर के तापमान को लगभग 8 डिग्री सेल्सियस तक कम करने में मदद मिलेगी।
- अपने फूड प्रोसेसर (मिक्सरऔरग्राइंडर) में ड्राई ग्राइंडिंग से बचें क्योंकि इसमें लिक्विड ग्राइंडिंग से अधिक समय लगता है।
- मकान की छतों पर सफेद रंग की पेंट से कोट करें अथवा सफेद रंग के सिरामिक फ्लोर टाइल्स से कवर करें जिससे कि सूर्य की रोशनी परावर्तित हो जाए ।

रचनाएँ भेजने हेतु आग्रह

- आपकी स्वरचित रचनाओं का पूर्वोत्तर सीमा रेल दर्पण में स्वागत है ।
- पत्रिका को बेहतर बनाने हेतु लेखक/कवि एवं पाठकों के पत्रों एवं सुझावों का स्वागत है ।
- लेखकों से अनुरोध हे कि अपना नाम, पता, मोबाइल नं०, ई-मेल आइडी, फोटो अपनी रचना के साथ हमारे ई-मेल : ol1958nfr@gmail.com पर भेजें ।

– संपादक, पूर्वोत्तर सीमा रेल दर्पण

"हारने पर रोओ मत, उठो और हार के कारणों को खोजो और जीतने के लिए पुनः आगे बढ़ो।"

- गुरु गोबिंद सिंह

उपलब्धियां

रेल मंत्री राजभाषा रजत पदक पुरस्कार (आधार वर्ष 2022) श्री रविलेश कुमार, पूर्व मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं प्रधान मुख्य बिजली इंजीनियर, पूर्वोत्तर सीमा रेलवे, मुख्यालय, मालीगाँव को

भारत सरकार, रेल मंत्रालय रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सतीश कुमार के कर कमलों द्वारा दिनांक 20-03-2025 को प्रदान किया गया ।

रेल मंत्री हिंदी निबंध पुरस्कार (आधार वर्ष 2023-24) श्री राकेश रमण, कार्यालय अधीक्षक, कटिहार मंडल

रेल मंत्री हिंदी निबंध प्रतियोगिता में अराजपत्रित वर्ग के अंतर्गत "भारतीय रेल में पर्यावरण प्रबंधन" विषय पर प्रथम स्थान प्राप्त करने पर श्री सतीश कुमार, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी के कर कमलों से पुरस्कार ग्रहण करते हुए ।

अखबारों के पन्नों में

गुवाहाटी, मंगलवार, 1 अक्टूबर, 2024
दैनिक पूर्वोदय
पूसी रेलवे की क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक व पुरस्कार वितरण समारोह

4 रविवार 9 जून 2024
पूर्वांचल प्रहरी
पूसी रेल मुख्यालय के चिकित्सा विभाग में हिंदी कार्यशाला संपन्न

दैनिक पूर्वोदय
गुवाहाटी, बुधवार, 2 अक्टूबर, 2024
स्वच्छता अभियान में पूसी रेलवे की सक्रिय भागीदारी

सेंटिनल
गुवाहाटी, गुरुवार 19 सितंबर, 2024
पूसी रेलवे मुख्यालय में राजभाषा पखवाड़ा-2024 प्रारंभ

पूर्वांचलप्रहरी गुवाहाटी
शुक्रवार 20 सितंबर 2024
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, केंद्रीय कार्यालय-2 की समीक्षा बैठक संपन्न